Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

22

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शाहाबाद जिला भोजपुरी-साहित्य सम्मेलन

प्रथम अधिवेशन

अध्यक्ष :

श्री बाबू दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह

का

अभिभाषण

आरा

सम्वत् २००४

CC-0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varai

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस प्रतिज्ञा को दुहराते भी हैं। परन्तु वीर भारत के लाड़ले पुत्र हम भोजपुरियों ने कॉंग्रेस के जन्म के बहुत पहले, सन १८५७ की जनक्रान्ति में, जब हमारा वीर सेनानी, बिहार व्याघ्र, दादा कुँअर सिंह ने स्वतन्त्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुती दी थी इस स्वतंत्रता प्लेज को लिया था और तब से आज तक हर फाग को, जब प्रकृति अपनी चोला बदलती है और मानव के धमनियों में मस्तो के रक्त का संचार होता है प्रत्येक भोजपुरिया—उस जन क्रान्ति को, उस सन १८५७ की धधकती जन क्रान्ति को स्मरण करता है और गाँव गाँव में, गली गली में, फाग गान के लिए एकत्रित जन-समूह के बीच मृदंग के ताल पर वह अपनी स्वतंत्रता प्लेज को—अपने जीवन के फागुन को मस्ती में इन शब्दों में दुहराता है।

बाबू कुंअर सिंह तोहरे राज बिनु,
अब न रंगइबों केसरिया।
इत ते अइले घेरि फिरंगी,
उतते कुँअर दुइ भाई।
गोला बरुद के चले पिचकारी,
बीचवा में होली लड़ाई॥ बाबू०

और इस स्वतंत्रत प्रतिज्ञा को बार २ दुहराने का फल आज यह हुआ है कि भोजपुरियों ने, चाहे वे U.P. प्रान्त के हों

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

या विहार प्रान्त के कांग्रेस के इतिहास के प्रत्येक जन आन्दोलन के अवसर पर उत्तर भारत में सबसे आगे का मोर्चा लिया है। यही नहीं मुसलमानी शासन काल में भी भोजपुरी भाषा प्रदेश अधिकांश रूप में स्वतंत्र रहे हैं। यही कारण है कि भोजपुरी प्रदेशों में मुसलमानों की जनसंख्या दश बारह प्रति शत से अधिक नहीं बढ़ सकी।

बौद्ध और पूर्व बौद्ध काल में भी भोजपुर प्रदेश के मल्ल रिपब्लिक अपनी शक्ति और पराक्रम के लिए विख्यात थे। गोरखपुर जिला के मझौली राज के विश्वेन तथा शाहाबाद के पम्मार क्षत्रियों के पूर्वज "मल्ल" उपाधि धारी थे। मझौली राजघराना तो आज भी मल्ल की उपाधि रखे हुए हैं। भोजपुरियों की बक्सरी नाम की सेना अकबर के समय में सबसे बहादुर सेना समझी जाती थी। और कान्धार विजय के लिए वही सेना भेजी गई थी। अतः भोजपुरियों की राष्ट्रियता, देशप्रेम और वीरता नयी नहीं वरन् वह बहुत पुरानी है। भोजपुरिया संस्कार से ही अखड़, वीर, बहादुर, देशप्रेमी और राष्ट्रिय विचार का होता है। इसीलिये वह शक्ति का पूजक है। आदि शक्ति दुर्गा ही उसकी कुल देवी है। राम और कृष्ण उसके आराध्य देव नहीं। वह उनकी वन्दना में भी उनके वीर स्वरूप को ही स्मरण करके अपने वीर

CC-0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संस्कार का परिचय देता है। ऊपर का वन्दना गीत इस कथन का प्रमाण है।

भोजपुरी, उसकी प्राचीनता और इतिहास

शाहाबाद जिला के बक्सर सबडिविजन में भोजपुर नाम का एक बड़ा परगना है। परगने के भोजपुर नाम होने की उत्पत्ति डुमराँव राजधानी से दो तीन मील उत्तर गङ्गा के निकट "नवका भोजपुर" और "पुरनका भोजपुर" नामक दो छोटे गाँवों से होती है। इसी भोजपुर और इसके आस पास में बोली जाने वाली भाषा का नाम भोजपुरी हैं जो आज बहुत दूर दूर के जिलों तक में बोली जाती है। रायल एशियाटिक सोसाइटी के जरनल भाग तीन सन् १८६८ पृष्ठ ४८३-५०८ में भोजपुरी भाषा पर जान बीम्स ने लिखा है:—

"इस बोली का नाम भोजपुरी प्राचीन भोजपुर नामक नगर से लिया गया है। यह नगर शाहाबाद जिला में गंगा के दक्षिण कुछ मील पर ही बसा था। जिसकी दूरी पटना से ६० मील थी। आज दिन तो यह एक छोटा सा गाँव है। किन्तु किसी समय में यह शक्तिशाली राजधानी था। इस शक्तिशाली जन पद के अगुआ इस समय डुमराँव के महाराजा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हैं। इस जाति ने १८५७ की क्रान्ति के नेता बाबू कुअँर सिंह के नायकत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध सन् १८५७ में लोहा लिया था। शहरुल अख़तरीन के पढ़ने वाले जानते हैं कि औरङ्गजेब के सूबेदारों को भी भोजपुर के राजाओं को दबाने का भगीरथ प्रयत्न करना पड़ा था। किन्तु उस पर भी वे दबाये न जा सके। भोजपुरी के क्षेत्र में प्राचीन हिन्दू धर्म की भावना आज भी बड़ी प्रबल है और हिन्दू जन संख्या के सामने मुसलमानों की जन्म संख्या बहुत कम है। राजपुतों के साथ कहीं २ भूमिहारों और ब्राह्मणों की सत्ता भी प्रबल है।"

पुरनका भोजपुर आज भी एक बड़े गाँव के रुप में वर्त्तमान है। वहाँ रंगमहल और सिंहासन बत्तीसी वाली बत्तीस पुतलियों का टीला वर्त्तमान है। यहीं पर राजाभोज को अपनी बत्तीस विभिन्न कहानियों को विक्रम की प्रशंसा में ३२ पुतलियों ने सुनाया था। ये किस्से जनश्रुत के रुप में वहाँ सुनने को आज भी मिलते हैं। शकारि राजा विक्रमादित्य के भतीजे साहित्यिक राजा भोज की कहानियाँ भी बूढ़ों के मुख से तत्सम्बन्धी स्थानों के संकेत के साथ साथ वहाँ सुनने को मिलती हैं। भोजपुर चौदह कोस का नगर गंगा तट पर आसीन था। आज गंगा वहां से कई मील उत्तर : तरफ हट गई हैं। भोजपुर की ख्याति के सम्बन्ध में आज भी मुझे यह कहावत

C0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS.

वहाँ सुनने को मिलो—"बावन गली तीरपन बाजार दीया जले छप्पन हजार।" इस हिसाब से छप्पन हजार दीपक जलाने वाले छप्पन हजार परिवारों की जन संख्या जो भोजपुर में उस समय बसते थे, यदि दश व्यक्ति फी परिवार की जन संख्या मान कर आँकी जाय तो वह ५६०००० होती है।

नवका भोजपुर मुसलमानी काल का बसाया हुआ है। यह धार के तृतीय भोज के नाम पर जो महाराज शान्तन शाह के पितामह थे और जिनके समय में धार का पतन हुआ था, बसाया गया था। धार के तृतीय भोज के ज्येष्ठ पुत्र जयदेव को धार के पतन के बाद धार छोड़ देना पड़ा। (देखिये भोजपुरी लोक गीत में करुण-रस की भूमिका पृष्ट ४ से १६ तक।) उनके ज्येष्ठ पुत्र शान्तन शाह ने अपने पूर्वजों के इस भूखण्ड पर सन् ८११ फसली में पुनः पदार्पण किया और इसको यहाँ के भुइयों से जीत कर यहाँ पुनः अपना राज्य स्थापित किया। नवका भोजपुर का नवरत्न किला मुसलमानी कला का सुन्दर नमूना है।

फिर सन् १७८१ ई० में भोजपुर जिला था। जिला ही तक नहीं सुदूर भूत में इस राज की सत्ता और प्राक्रम की धाक अन्य जिलों तक फैली हुई थी।

C0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आज से चार सौ वर्ष पूर्व अकबर की हुकूमत की शान्ति में भी इसके कारण काफी हलचल मची हुई थी। (देखिये डाल्टन साहब का छोटानागपुर के मुसलिम इतिहास पर नोट। आर० ए० एस० बी० १८७१ पृष्ट ३-१२ तथा तवारीख उज्जैनियाँ नामक प्रकाशित उर्दू ग्रन्थ।) सन १७६१ ई० में जो अंग्रेजों और मीरकासिम के बीच बक्सर में लड़ाई हुई थी उसमें भी इन भोजपुरियों ने देश प्रेमी मीरकासिम का ही पक्ष लिया था। काँग्रेस काल के राजनीतिक अहिंसात्मक तथा हिंसात्मक आन्दोलनों के अवसर पर भोजपुरी प्रदेश के कार्य्यों का वर्णन करना अनावश्यक है। इसे आप सभी जानते हैं। यह भोजपुरी के इतिहास का संक्षिप्त विवरण है।

भोजपुरी भाषा का विस्तार

इस सम्बन्ध में डा० जी० ए० ग्रियर्सन ने बहुत वैज्ञानिक और सप्रमाण अन्वेषण किया है। आप ने अपने लिंगुइस्टिक सर्वे आफ इण्डिया भाग पांच में भोजपुरी भाषा की सीमा निर्धारित करके बतलाया है कि भोजपुरी संयुक्त और बिहार प्रान्त के चौदह जिलों में बोली जाती है। उन्होंने लिखा है—"उस भूभाग का जिसमें केवल भोजपुरी भाषा ही बोली जाती है क्षेत्रफल निकालने पर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पचास हजार वर्गमील होता है। इस भूभाग के निवासियों की मातृभाषा भोजपुरी है। उनकी जन संख्या २०००००० करोड़ है। पर मगही और मैथिली बोलने वालों की संख्या क्रम से ६२३५७८२ और १०००००० है। और बघेली, बुन्देलखण्डी तथा छतीसगढ़ी भाषा भाषियों की संख्या क्रम से १४१७०५५०, १६०००००, ४६१२७५६ और ३३०१७८० है।"

ये संख्यायें उस समय की हैं जब लिंगुइस्टिक सर्वे आफ इण्डिया प्रकाशित हुआ था। उस समय भारत की जन संख्या २९४३६०००० थी, इसबार १९४१ की जन गणना की संख्या ३८८०००००० थी। अतएव इस हिसाब से वर्त्तमान भोजपुरी भाषियों की कुल संख्या २६४०००००० होती है यानी भारतवर्ष की कुल जन संख्या का १४.५ प्रतिशत भोजपुरी भाषा भाषियों की संख्या है।

इन भाषा भाषियों के अलावे मराठी और ब्रज भाषा बोलने वालों की संख्या क्रम से १९२१ की जन गणना के हिसाब से १८७५७८३१ और ७८३४२७४ है। इन संख्यायों से मिलान करने से हम देखते हैं कि भोजपुरी भाषियों की संख्या केवल उन्हीं हमजोली निकटवर्त्ती भाषाओं के बोलने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वालों से बड़ी चढ़ी नहीं है बल्कि वह उन भाषा भाषियों से भी अधिक है जिनका अपना प्रौढ़ साहित्य है। और जो शिक्षा का माध्यम बनने का सौभाग्य प्राप्त कर चुकी हैं। तो इस तरह प्रदेश विस्तार तथा बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से भोजपुरी भारत के अत्यधिक मान्य आठ भाषाओं में जिनमें-तीन को शिक्षा का माध्यम सरकार द्वारा स्वीकृत कर लिया गया है अपना स्थान सर्व प्रथम रखती है।

भोजपुरी की उपादेयता

सभी जीवित भाषाओं की तरह भोजपुरी भी उदार भाषा है। यह किसी भी भाषा के शब्दों और मुहावरों को अपने अनुरूप बनाकर अपनाने के लिये सदा तैयार रहती है। भारत के एक विस्तृत भूभाग पर ही नहीं बल्कि अफ्रिका और बर्मा तथा मारीशस आदि टापुओं और आसाम प्रदेश में भी प्रवासी भोजपुरियों ने भोजपुरी को कायम रख कर इसकी व्यापकता को और बढ़ा दिया है। इससे इसके शब्द-कोष की निधि बहुत विशाल है। इसको लोकोक्तियाँ, मुहावरे, पहेलियाँ, व्यंग्योक्ति आदि का भाण्डार बहुत प्राचीन और विशाल है। ये सारी निधियां भोजपुरियों के कंठ में आज भी वर्त्तमान हैं। जिनके संकलन और प्रकाशन से हिन्दी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भाषा का शब्द भाण्डार बहुत ही परिपूर्ण हो जायगा। आज जानकारों से यह बात छिपी नहीं है कि हिन्दी की इस सर्वाङ्गीय उन्नति के समय में भी देहाती ग्रामीण विषयों पर लिखते समय हिन्दी लेखकों को शब्दों का टोटा होने लगता है। यह बात कुछ विचित्र सी जान पड़ती है लेकिन है ये सोलहों आने सच्ची। अपने रोजमर्रे के परिचित विषयों से भी हम सर्वथा अनभिज्ञ हैं। विशेषतः खेती बारी, कला कौशल, शिकार आदि की चीजों से। उदाहरण के लिए कई आवश्यक शब्दों की परीक्षा कीजिये। भोजपुरी में बच्चा देने की अवस्था प्राप्त होने पर भी जो गाय बच्चा नहीं देती उसे "कजोर" कहते हैं। गाय के तुरन्त उत्पन्न हुए बच्चे को (जिसे वेद में धरुण कहते हैं) लेरुआ कहते हैं। गर्भाधातिनी गाय का नाम है लडायल और जिस गाय को बच्चा नहीं उत्पन्न होता उसे बहिला कहते हैं। यह बहिला शब्द भाषा की दृष्टि से दशा के अनुरूप ही है। इस प्रकार गाय की विभिन्न अवस्थाओं के सूचक जो सार्थक शब्द भोजपुरी में उपलब्ध होते हैं इनके अनुरुप खड़ी बोली में ढूंढने पर भी शब्द नहीं मिलेंगे। फिर बहुत से ऐसी संज्ञायें हैं जिनका परजाय वाची शब्द हिन्दी में नहीं मिलते जैसे—भकअंजोरी, गुमसाइन, खोंइछ, मेहरबस अतः भोजपुरी से

C0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varan

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इन शब्दों को बिना लाये हिन्दी भाषा का भाण्डार कदापि नहीं भर सकता। इसी प्रकार से आसावती, उरहना, चेलिक, अनुहार, सहवा, रसभल्ला आदि हजारों ऐसे शब्द हैं कि इन्हें अपनाने से खड़ी बोली में व्यापकता के साथ २ गतिमय जीवन भी आ जायेगी। भोजपुरी के मुहावरे और लोकोक्तियाँ इतनी अनूठी हैं कि उनको व्यापक रूप से हिन्दी में प्रयोग करने से ही हिन्दी का कल्याण अधिक संभव है। इन्हें प्रान्तीय तथा ग्रामीण कह कर अनादर नहीं कर सकते। ये ग्राह्य हैं उपेक्षणीय नहीं। हिन्दी का कल्याण जनपदीय बोलियों के शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों को अपनाने तथा बोलियों से अपना सम्पर्क बनाये रखने में है न कि त्यागने में कुछ उदाहरण लीजिये:—

एक तो बहुनी अपने गोर, दोसरे अइली कमरिया ओढ़। एही कमाई पर तेल चुकवो। जिन्ह बिअइली तीन्ह ललइली बटा ले पड़ोसी भइली। मुहावरे:—पाताल खिलना=बहुत दूर चला जाना। फिरहिरी होना=कार्य्य में व्यग्र होना। लगा लगाना=प्रारम्भ करना। तरवा में आग लगना=क्रोध से आग बबूला हो जाना। हाथ झूलाते आना=असफल होना। भोजपुरी मुहावरों का कितना सुन्दर प्रयोग अम्बिका प्रसाद जी के निम्नलिखित झूमर गीत में हुआ है—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मारत बा गरिआवत बा देख इहे करिखहवा मोहि मारत बा।
आँगन कइलौं पानी भरि लइलौं, ताहूपर लुलुआवत बा॥
अस सौतिन के माने माई, हमरा बदही बनावत बा।
ना हम चोरिन ना हम चटनी, मुठहूं अछरङ्ग लगावत बा॥
सात गदहा के मारि मोहि मारे, सूअर अस घिसिआवत बा।
देखहु रे मोर पार परोसिन, गाई पर गदहा चढ़ावत बा॥
पिअत्रा गँवार कहल नाहीं बूझत, पनिया में आगि लगावत बा।

" भोजपुरी की कहानियाँ "

भोजपुरी की लोक कहानी के सम्बन्ध में मैं यहाँ केवल इतना ही कह देना चाहता हूं कि जिस भी विषय की कहानी को आप भोजपुरी में खोजिये—चाहे वह विषय देश प्रेम का हो या शिक्षा, धर्म, नीति, दर्शन सम्बन्धी हो, या भूत, दानव, परी, ठग, प्रेम, संयोग वियोग का हो सभी विषयों की कहानियाँ भोजपुरी ग्रामीणों के कंठ से आप सुन लेंगे। प्रायः हर गाँव में कहानी कहने वाले होते हैं। उनकी भाषा इतनी मजी हुई और वर्णन शैली उतनी प्रौढ़ होती है कि सुनते समय प्रेमचन्द जी के उपन्यासों का मजा आ जाता है। भोजपुरी प्रदेश से बौद्धों का सम्पर्क काफी रहा है। इससे भोजपुरी में बौद्ध कहानियों का प्रचलन भी

C0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varan

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

खूब है। पाली के "नाम सिद्ध जातक" के एक बौद्ध कहानी का रुपान्तर भोजपुरी में ठट्टपाल की कहानी है।

ठट्टपाल नामक शिष्य ने अपना नाम बदलने के लिये गुरु से आग्रह किया। गुरु ने उसे समझाया कि नाम से गुण नहीं है, गुण से नाम है। इस पर भी न मानने पर वह स्वयं परीक्षा करके देख लेने के लिए आश्रम से बाहर भेजा गया। शिष्य ठट्टपाल जब आश्रम से चला तो खेत में उसे एक स्त्री अन्न बिनते हुए दिखाई पड़ी। नाम पूछने पर उसने अपना नाम लछमीनियाँ बताया। फिर आगे एक हलवाहे ने अपना नाम धनपाल बताया। आगे चलने पर एक मुर्दा मिला जिसका नाम अमर बताया गया तब उसे ज्ञान हुआ और गुरु के पास आकर उसने कहा—

"बिनोया करत लछमीनियाँ के देखलीं, हर जोतत धनपाल।
खटीया चढ़ल हम अम्मर देखलीं, सब से निमन ठट्टपाल॥

"भोजपुरी की मधुरता"

भोजपुरी भाषा के उच्चारण में एक विशेष मिठास और फ्रेन्च भाषा की तरह लोच और संगीत मय उतार चढ़ाव है। जिस तरह फ्रेन्च भाषा में अनुनासिक स्वर का प्रयोग अधिक होने तथा शब्दों के विलम्बित उच्चारण करने के कारण संगीतमय उतार चढ़ाव की ध्वनि निकलती है, उसी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तरह भोजपुरी के उच्चारण में भी जगह अनुनासिक स्वर के शब्दों का कुछ बंगला जैसा ढीला लम्बा उच्चारण किया जाता है जिससे इसके शब्दों के उतार चढ़ाव में स्वर संगीतमय हो उठता है और भाषा बहुत ही मधुर बन जाती है।

"भोजपुरी का व्याकरण"

भोजपुरी व्याकरण की उदारता, सादगी और लचीलापन बहुत सराहनीय है। इसके व्याकरण की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसके नियम जटिल नहीं है इसमें नित्य नये २ सामयिक प्रयोग आते रहते हैं। इसके विशेषणों के प्रयोग में लिङ्ग का विचार बहुत कम रखा जाता है।

भोजपुरी उपमायें

हिन्दी काव्य की अधिकांश उपमायें परम्परा मुक्त होने से बासी तथा फीकी लगतीं है। नई शैली की उपमायें इतनी abstract होतीं हैं कि उनको श्रोतायों या पाठकों को समझने के लिए परिश्रम करना पड़ता है पर भोजपुरी गीतों की उपमायें नितान्त स्वभाविक और बोध गम्य हैं। ये स्वछन्द बहने वाली नदी की तरह स्वतंत्र हैं। ये जंगल में स्वतः खिलने वाले पुष्पों की तरह सुन्दर हैं। भोजपुरी का अज्ञात कवि मुख की उपमा सूरज की ज्योति से, पीठ की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

धोबी के पाट से, आँख को आम के फाँक से, ओठ की कतरे पान से, बाँह की सोने की घड़ी से, पेट की पुरइन के पत्ते से उपमा देता है।

भोजपुरी गीत

भोजपुरी गीतों के सम्बन्ध में हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो० पं० बलदेव उपाध्या ने सिवान के भोजपुरी प्रान्तीय-साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए कहा था—"भोजपुरी गीतों की मधुरिमा किस साहित्यिक के मानस में आनन्द की लहरी उद्वेलित नहीं करती? भाषा का सौन्दर्य तथा भावों का सौष्ठव किसी भी दृष्टि से इनकी समीक्षा की जाय, इनका स्थान उच्च कोटि के काव्यों में दिया जायगा। भोजपुरी मैथिली तथा बंगाली की सगी बहन है। ये तीनों ही मगध अपभ्रंस की हमजोली बेटियां हैं। भोजपुरी की यह शब्द-माधुरी मागधी की देन है। मैथिला तथा बंगाली की शब्द माधुरी से हम भली भाँति परिचित हैं। हमारी बोलियों में निबद्ध गीत काव्यों की भी ठीक यही दशा है। भोजपुरी में ढलते ही कविता में एक अद्भुत शब्दिक मोहकता उत्पन्न हो जाती है—ऐसे मोहकता की आस्वाद लेने वाले रसिकों के हृदय को बरबस मस्त बना देती है।" और

CC-0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ऐसे ही गीतों से भोजपुरी के साहित्य का भाण्डार भरा पड़ा है। यद्यपि यहां स्थान की कमी है पर इसी कमी में भोजपुरी के प्रौढ़ साहित्य की रूप-रेखा से आपको कुछ परिचित करा देना मेरे भोजपुरी अध्ययन तथा प्रेम का तकाजा है। यदि मैं इस उचित मांग को पूरा करने से इनकार करूँगा तो भोजपुरी के साथ यह अन्याय होगा।

भोजपुरी साहित्य

भोजपुरी के साहित्य के सम्बन्ध में यह गलत धारणा है कि भोजपुरी का अपना साहित्य नहीं है और यदि साहित्य है तो वह प्रकाशित या लिखित नहीं है। मैं मानता हूं कि भोजपुरी का बहुत बड़ा साहित्य भोजपुरी भाषियों के कण्ठों में आज भी निहित है। वह संग्रहीत होकर मुद्रित नहीं हुआ है। और इससे हिन्दी के विद्वानों के सामने उसकी प्रौढ़ता अभी प्रमाणित नहीं हो सकी है। परन्तु इसी आधार पर भोजपुरी में साहित्य का आभाव यदि कहा जायगा तो वह सिद्ध नहीं होगा। वेद भी एक दिन कंठों में निहित था। बाद को उसका संकलन हुआ। तो इससे क्या वेद में साहित्य का अभाव कहा जायगा ?

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

फिर यह कहना भी उतना ही गलत है कि भोजपुरी को कोई बड़ा कवि या राजाश्रय नहीं मिला जिससे भोजपुरी के विकास तथा लोकप्रिय होने में बाधा पहुंची है। राजाश्रय की बात अभी पूर्व पृष्ठों में कह चुका हूँ। बड़े कवियों की बात यहां कहनी है। मैंने बीस वर्षों से भोजपुरी का अध्ययन जी तोड़ परिश्रम से किया है। मेरा अनुभव है कि भोजपुरी का साहित्य इतना बड़ा और प्रौढ़ है—चाहे वह लिखित हो या अलिखित कि उसके सहारे ही भोजपुरी भाषा प्रत्येक ठेठ स्त्री-पुरुष अपने सुख दुख की विकट घड़ियों में ढाढ़स और बल, गति और जीवन तथा साहस और पौरुष ग्रहण करता है और अपने हृदय के घावों पर मलहम पट्टी करके आगे की जीवन-यात्रा चालू करता है। भोजपुरी गीतों के संग्रह-काज में मुझे प्रायः हिन्दी के सभी सन्त कवियों की रचनायें प्रचुर मात्रा में मिली है। ये रचनायें केवल ग्रामीणों के कंठ से ही प्राप्त नहीं हुई हैं बल्कि हिन्दी के पुराने और नये प्रकाशित और अप्रकाशित संग्रह-ग्रन्थों में भी अपने उसी पाठ में मुझे मिले हैं जो पाठ संग्रह काज में ग्रामीणों से मुझे प्राप्त हुए थे फिर केवल हिन्दी के प्रकाशित संग्रह ग्रन्थों से ही मुझे इस दिशा में सहायता नहीं मिली है बल्कि पुराने पाण्डुलिपियों और ताल पत्रों के पाठ से भी भोजपुरी में सन्त कवियों की रचनायें प्राप्त हुई हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जब प्राकृति भाषा का युग लदने लगा और जन पदीय भाषाओं का प्रवाह सरलता की ओर बहने लगी तब तत्कालीन सन्त कवियों ने जिनको अपना उपदेश सभी जन साधारण तक पहुंचाना ध्येय था अनुभव किया कि जनपदों की बोलियों को अपनाये बिना वे इस उद्देश्य में सफल नहीं हो सकते। अतः उन्होंने प्रमुख प्रमुख जनपदीय भाषाओं को अध्ययन करके उन भाषाओं में भी अपना सन्देश सुनाया। प्रतिभा सम्पन्न तो वे होते ही थे फिर उन दिनों हिन्दी और उर्दू जैसा भाषा सम्बन्धी विवाद भी विद्वानों के मस्तिष्क में नहीं था। अपने भ्रमणकाल में वे जहाँ जाते थे या जिस जनपद को जनता का समूह उनके पास ज्ञान ग्रहण करने के लिये आता था वे उन्हीं की भाषा में उनको अपना संदेश सुनाते थे। यही कारण है कि उत्तर भारत के प्रायः सभी सन्त कवियों की रचनायें कई जनपदीय भाषाओं में बहुतायत से पाई जाती हैं। अपने इस कथन को प्रामाणिकता में मैं धरणीदास जी के 'शब्द प्रकाश' जो सन् १८८७ में मुद्रित हो चुका है पेश करूँगा। इस पाण्डुलिपि में कई जनपदीय भाषाओं के छन्द मिले हैं। उनका नाम कारण भी उन्हीं भाषाओं के नाम पर किया गया है। जैसे राग तिरहुती, राग भोजपुरी, राग बंगला, राग पंजाबी, राग मोरंगी, राग अजहोया इत्यादि जिनके दो एक उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

C0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राग तिरहुती—धनाश्री

सुतली अछनी पने ऐजहु गोसाईं साईं,
छजी हूं अचेत पड़ि चेत भेल तेषना।
माथे हाथे देल छी जगाये जतु लेल छी अनेक कज्ञाकेज्ञ,
छी न बाजि आवै ऐषना।
जेहि गते छजी हूं उठली हूं मैं तेहि गते पावन,
पुरुष पापनी के भेल देषना।
धरनी कहे छी बीसरे छी नेक ना क मोइ हिअ में छपाल छी,
करै छी कोटि प्रेषना ॥१

राग बंगला

सकज्ञ भुअनेर मुने जीवन अधार बन्धु।
कौन जाने कौन बुझै तुमरे षिआले॥
जिआ जन्तु गाइ रे गोठा एकेज्ञ गोआले बन्धु,
जनमु जनमु हमे करमु कमाइलो।
अवरोक बार बंधु सरन समाइलो॥
बसीबो तुमारी बारी अनते न जाइबो।
तुमरो कीरति तजि अवर की गाइबो॥
धरनी कथीलो जानी बानी रे बज्ञाज़ी।
साइ के दरस बिना बिकल बीहालो॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राग पंजाबी

सुरंग रंग सावज़ा मुझे मोहिया
जमुना किनारे कदम दी छहियां।
पान दी बीरियाँ चाब दाबैं॥

इत्यादि—

अब धरनी दास जी की भोजपुरी की भी एक महराई सुन लीजिए—कितना सुन्दर वर्णन तथा शब्द संचय है। इसीसे आप भोजपुरी शब्द-कोष का अन्दाज भी लगा सकते हैं। इस महराई में कवि अपनी कल्पना में ईश्वर की छवि देखता है।

बिसराम

ताहि पर ठाढ़ देखऊ एक महरा, अबरनी बरनी न जाय।
मन अनुमान कहत जन धरनी धन जे सुनि पति आय॥

पांव दुओ पउआ परम झलकार,
दुरहुर स्याम तन लाम लहकार।
लंबहरि केसिया पतरि करिहाँव,
पीअरी पछौरी कटि कहते न आव।
चन्दन कखोरि भरेला सब अंग,
धारा अनगनित बहेला जनु गंग।

00. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माथ मनि मुकुट लकुट मुठि लाल,
झीनवां तीलक सोभै तुलसी के माल।
नीक नाक पतरी ललौंहि बड़ि आँखि,
मुकुट मंझारे एक मोरवा के पाँखि।
कान दुओ कुंडल लटक लट झूल,
दारही गोंछ नूतन जैसन मखतूल।
पर फुलित बदन मधुर मुसकात,
ताहि छवि उपर धरनि वलि जात।
मन कैला दंडवत भुइयाँ धरि सीस,
माथे हाथे धरि प्रभु देलन्ही असीस,

यह महराई बहुत बड़ी है। जहाँ गायों का वर्णन आया है वहां एक गाय की भिन्न २ अवस्थाओं तथा रंगों आदि के लिए बहुत से भोजपुरी शब्दों का प्रयोग हुआ है। जिसको देखने से भोजपुरी के शब्द-भंडार का ज्ञान होता है।

संत कवि धरनी दास की पाण्डु लिपि से अपने पक्ष का इतना प्रमाण दे देने के बाद मुझे अपने कथन की पुष्टि में अन्य महा सन्त कवियों की भोजपुरी रचनाओं को भी उनके पाठ को प्रामाणिकता के साथ सुनाना अपना कर्त्तव्य होता है उनके पाठ में भेद होने की दलील पेश की जा सकती है, पर जब कुछ हेर फेर के साथ इनके वे ही पाठ ताल-पात्रों में या

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पाण्डुलिपियों में भी मिल जाते हैं तब उनको मान लेने के अतिरिक्त हमारे पास दूसरा चारा नहीं।

मैथिल महाकवि विद्यापति ठाकुरजी की भोजपुरी रचनाएँ

शिवनन्दन ठाकुर लिखित तथा पुस्तक भांडार द्वारा प्रकाशित 'विद्यापति ठाकुर' नामक पुस्तक में जो ३०० वर्ष पूर्व के ताल-पत्रों की प्रतिलिपियाँ दी गई हैं, उनको पढ़ने से बहुत गीत भोजपुरी के भी उनमें मिले हैं। उनके पाठ में जहाँ तहाँ जो अति साधारण भेद हैं, वे प्राचीन और अर्वाचीन भोजपुरी के पाठ-भेद भी कहे जा सकते हैं। उस पुस्तक से विद्यापति जी की भोजपुरी गीत का उदाहरण देखिये—

सैसव जोबन दरसन भेल,
दुहु पथ हेरइत मन सिज गेल।
मदन क भाव पहिल परचार,
भिन्न जन के भिन्न अधिकार।
कटि क गवरव पावल नितम्ब,
एक क खीन एक अवलम्ब।
परगट हास अब गुपुत भेल,
उरज परगट अब तन्हिक लेल।
चरन क चपल गति लोचन पाव,
लोचन धीरज पदतल जाव।

CC-0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नव कवि शेखर कहइत वार,
भिन भिन राज भिन वेवहार।

(प्राचीन और अर्वाचीन भोजपुरी काव्य म भी मैल के स्थान पर भेल और गैल के स्थान पर गेल प्रयोग होता है।)

दूसरा उदाहरण

अँकुर तपन ताप जदि जारब,
का करबि वारिद मेहे।
ई नव जोबन विरह गंवाँइबि,
का करबि से पिय नेहे।
हरि हरि का हे दैव दुरासा।
सिंधु निकट जदि कंठ सुखायब,
को दूर करइ पिआसा।
चंदन तरु जब सौरभि छोड़बि,
ससिधर बरिसिब आगि।
चिन्तामनि जो निज गुन छोड़बि,
का मोर करम अभागि।
सावन मास घन विन्दु न बरिसब,
सर तर बाँझ कि छाहें।

इस गीत का पाठ उन ताड़ पत्रों में ठीक यही है। केवल गंवाँइबि, बरसिब, छाहैं के स्थान पर गमाएब, बरसिब और

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

छादें पाठ है। पहले दो शब्दों का अन्तर कोई अन्तर नहीं, वह भी भोजपुरी पाठ हैं पर "छादे" का अर्थ निकलता नहीं। "छाहें" शब्द से अर्थ साफ हो जाता है।

इस प्रमाण के होने पर भी बाबू श्यामा चरण गंगुली ने कलकत्ता रेव्यु में लिखा था कि भोजपुरी में विद्यापति जी के गीत अनूदित भी नहीं है। परन्तु उसी का प्रतिवाद ग्रीयर्सन साहब ने रायल एशियाटिक सोसाइटी ग्रेट ब्रीटेन ऐन्ड आयरलैंड के नई सिरीज पृष्ट १८८ पर लिखा और निम्नलिखित गीत को उद्धृत करके साबित किया कि भोजपुरी में विद्यापति जी के गीत हैं। फिर मैंने अपनी विधवा चाची साहबा को अर्द्ध रात्रि में इस गीत को गा-गा कर रोते भी सुना है। इसी के साथ भोजपुरी में विद्यापति जी के नाम पर विद्यापद राग विख्यात हैं जो विद्यापति के गीतों के लिए प्रयोग किया जाता है और मुझे विद्यापति जी के बहुत गीत ग्रामीणों के कंठ से मिले हैं।

विद्यापती जी का पूर्व्व कलित गीत यों है :—

बलहर घरवा के नीव दुअरिया ए उधो,
रामा झिम मिल बाती।
पिया ले मैं सुतलों ए उधो, रामा अचरा डसाई ॥१॥
जौं हम जनितों ए उधो, रामा पिया जइहें चोरी,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रेशम के डोरिया ए उधो, खीची बंधवा बंधितों ॥२॥
रेशम के डोरिया ए उधो, टुटी फाटि जइहें,
बचन बान्हल पियवा, रामा से हो कहाँ जइहें ॥३॥
(इसका दूसरा पाठ चाची सोहना द्वारा प्राप्त यों हैं।)
प्रेम के बन्हनका पियवा जीवे संग जइहें ॥३॥
जवनि डगरिया ए उधो, रामा पिया गइले चोरी,
तवनि डगरिया ए उधो, रामा बगिया लगइबों।
बगिया का ओते ओते रामा केरा नरियर लगाई ॥४॥
अंगना ससुरवा उधो, रामा दुअरा भसुरवा।
कइसे के बाहर होखुँ, रामा बाजेला नुपुरवा ॥५॥
गोड़ के नुपुरवा ए रामा फोंड़े बांधि लेबो,
अलप जोबनवा ए उधो, रामा हिरदय लगइबों ॥६॥
पात मधे पनवा ए उधो, रामा फर मधे नरियर,
तिबई मधे राधा ए उधो, रामा पुरुष मधे कन्हाई ॥७॥
कतलें पहिरों ए उधो, रामा कतले समुझों गुनवा,
सोने के सिंधोरवा ए उधो, रामा लागि गइले घुनवा ॥८॥
मोरा लेखे आहो ए उधो, रामा दिनवा भइले रतिया,
मोरा लेखे आहो ए उधो, रागा जमुना भयावनि ॥९॥
भनहिं विदापति रामा सुनहु ब्रजनारी,
धीरजा धरहु ए राधा मिलिहें मुरारी ॥१०॥

0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varan

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विद्यापति जी की भोजपुरी रचनाओं को रामनरेश त्रिपाठी जी ने अपनी कविता कौमुदी भाग १ में भी उद्धृत किया है उससे बाल विवाह पर की एक व्यंग्योक्ति तथा एक बारह माशा सुनियेः—

पिया मोर बालक हम तरूनी,
कवन तप चुकलों भइलों जननी।
पहिर लेल सखि दखिनक चीर,
पिया के देखत मोरा दगध सरीर॥
पिया लेलों गोद कइ चललीं बजार,
हटिया के लोग पुछे के लागें तोहार।
नाहीं मोर देवर नाहीं छोट भाय,
पुरुब लिखल हवएँ सामी हमार॥

बारह मासा।

भोर में कातिक पड़ेला जाड़,
मोहि छोड़ि कान्ता भइले बनिजार।
मोना झुलबि हो।
अगहन मास जे पहिली सनेह,
चलु गोरिया नैहर अपना गेह।
पान फूलेल कापड़ चीन्ह,
कान्त विछोह दई दुःख दीन्ह।
मोना झुलबि हो।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varan

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पूस मास पिया बरत तोहार,
मैं बरती पांचो अतवार।
नहाइ धोइ के दीहौं असीस,
जीअहु कान्त तू लाख बरीस।
मोना झुलबि हो।

माघ मास घन परेला तुसार,
कांपे हाथ अवरु थर थर गात।
कांपहू सेज तगरंहि खाट,
मों नाहीं जइहों तू सब जाव।
मोना झुलबि हो।

फागुन मास बहे फगुनी बयार,
तरवर पात सबहि झरि जाय।
जो मैं जनितिउं फगुन बहार,
हरिजो के रखितिउं नैन छिपाय।
मोना झुलबि हो।

चैत मास बन फूलले टेसू,
गोरिया पठवलो पिया के सनेसू।
सूनि सनेस पिया अजहूं न आय,
इ दुनो नैना रोय गवांय।
मोना झलबि हो।

CC-0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बइसाख मास सब मंगलचार,
अइहनि गवना बिअहिहनि बारि।
छइहन माड़ो गइहन गीत,
कन्त के पन्थ जोहन मोहि बीत।
मोना झुलबि हो।

जेठ मास बरसाइत होय,
बर पूजन निकसीं सब लोय।
अंगुरी से अधरा कजरवा क रेख,
फिरि फिरि कन्त मोर मुख देख।
मोना झुलबि हो।

असाढ़ मास असाढ़ी जोग,
घर घर मंदिर सजें सब लोग।
चिरई चिरंगुल खोता लगाय,
हमरा बलमु परदेसु में छाय।
मोना झुलबि हो।

सावन मास सखि अधिक सनेह,
पिय बिनु भूलेउ देह ओ गेह।
पहिरलीं कुसुमी उतरलीं चीर,
पिया बिनु सोहे न मांग सेनूर।
मोना झुलबि हो।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varan

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भादो मास जल गहिर गंभीर,
दामिनि दमके धारे न धीर।
ठनका ठनके मेह घहराय,
सेज छाड़ि धनी रोइ गवाय।
मोना झुलबि हो।

कुवार मास बन बोलेला मोर,
आउ २ गोरिया बलमु अइले तोर।
अइले बलमुआ पुजली आस,
पूरल 'विदापति' बारह मास।
मोना झुलबि हो।

यह गीत विशुद्ध भोजपुरी रूप में न लिख कर पंडित रामनरेश त्रिपाठी जी ने अपनी कविता कौमुदी में हिन्दी मिश्रित भाषा का प्रयोग किया है। सम्भव है वह उन्हें वैसा ही मिला हो और युक्त प्रान्त के मध्य के किसी जिले से यह उन्हें मिला हो जहाँ इसका विकृत रूप वैसा हो गया हो। त्रिपाठी जी इसे मैथिल कोकिल 'विद्यापति' जी द्वारा प्रणीत नहीं मानते।

कबीर दास के भोजपुरी गीत।

कबीर दास और उनके पुत्र कमाल के तथा उनके शिष्य धरम दास के सम्बंध में तो डा० उदयनारायण तिवारी

0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varan

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

M. A. का (जिन्हों ने भोजपुरी में डाक्टरेट की उपाधी ली है) कहना है कि इनकी सारी रचनायें पहले भोजपुरी में ही हुई थीं। और कबीर साहब ने भी एक दोहा लिख कर जो हिन्दी संग्रहों में छपा भी है साबित कर दिया है कि डाक्टर साहब का कहना अक्षरश: सत्य है। कबीर साहब का दोहा "हिन्दी कवि और काव्य" नामक पुस्तक में जो हिन्दुस्तानी एकाडिमी, प्रयाग से छपी हैं यों है:—

बोली हमरी पूरब की, हमे लखे नहि कोय।
हम को तो सोई लखे, ध्रुव पूरब का होय॥

कबीर साहब आज भी हर भोजपुरिया के सामने भोजपुरी कवि हैं और उनके भोजपुरी गीत उसको प्रिय हैं। इसी के साथ हिन्दी में रहस्यवाद कहने वाला पहला कवि कबीर ही हैं और कबीर जब भोजपुरी कवि हैं और भोजपुरी में उन्हों ने कहा है तब मानना पड़ेगा कि हिन्दी में रहस्यवाद की कविता भोजपुरी से ही अनूदित हुई या अनूदित नहीं भी मानें तो यह मानना ही होगा कि भोजपुरी कवि ने हिन्दी और भोजपुरी दोनों को एक ही समय में रहस्यवादी कवितायें प्रदान की। कबीर की रचना के आधार पर ही धरमदास और कमाल या अन्य शिष्यों की रचनायें हुई हैं। कबीर के गीत सुनिये—ये पाठ हिन्दी संग्रहों से लिये गये हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

केउ ठमका नगरिया लूटल हो।
चनन काठके बनल खटोलना,
तापर दुलहिन सुतलि हो॥
उठुरे सखि मोर मांग सवारहु,
दुलहा मोसे रूसल हो।
अइलें इमराज पलंग चढ़ि बइठलें,
नयनन अँसुआ टूटल हो॥
चारि जना मिली खाट उठवले,
चहुं दिसि धूँ धूँ ऊठल हो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
जगवा से नाता टूटल हो॥

धरमदास की कविता।

मितउ मड़इया सुनी करि गइलो।
अपने बलमु परदेस निकसि गइलो,
हमरा के कछू ना गुना देइ गइलो।
जोगिन बनि के मैं बन बन ढूढ़ौं,
हमरा के विरह बिरोग देइ गइलो॥
सँगवा के सखि सब पार उतरि गइली,
हम धनि ठाढ़ि अकेली रहि गइलों।
धरमदास यह अरज करेलें,
सार सबद सुमिरन देइ गइलो॥

0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Vara

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुलसीदास जी की भोजपुरी रचना।

तुलसीदास जी की भोजपुरी रचना के सम्बन्ध में तो कबीर साहब की बात लागू नहीं कही जायगी। पर उन्हों ने भोजपुरा में रचनायें नहीं की हो और उनकी रचनाओं पर भोजपुरी का छाप न हो सो बात नहीं है। उनका कार्य्य क्षेत्र काशी में रहा है जो भोजपुरी भाषा प्रदेश है और उनकी रचनाओं पर खास कर उनकी रामायण की भाषा पर भोजपुरी का काफी प्रभाव है। रामायण में भोजपुरी मुहाबरों का प्रयोग, शब्द और वाक्य तथा क्रियायें भोजपुरी में अवधी के साथ साथ भरी पड़ी हैं।

हमहुं कहबि अब ठकुर सुहाती,
पुनि आइबि यहि बेरिया काली,
जिमि गँव तकई किरात किसोरी,
जीवन मूरि सम जोगवत रहऊँ,
अचल होई अहिवात तुम्हारा।

रेखाङ्कित शब्द और क्रियायें भोजपुरी की हैं।

तुलसीदास के भोजपुरी में भजन, लेखक को मुसहर और चमारों के कण्ठ से भी मिले है जिनके यहीं हिन्दी से

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varan

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भोजपुरी में अनुदित होकर पहुंचने की बात मान्य नहीं हो सकती। तुलसीदास के अनेक भजन भोजपुरी लोक गीत में करुण रस और शृंगार तथा शान्त रस में संग्रहीत हैं।

उमीरिया हो बीति गइले प्रभु नाहीं अइले।
बारह बरिस के हमरी उमीरिया,
उमीरिया हो बीति०।
प्रभुजी के ढूढ़े अजोधया में गइलों,
डगरिया हो भूलि गइले प्रभु नाहीं अइले।२।
प्रभुजी के खोजे फुलवरिया में गइलों,
फुलन अमुराइ गइलों प्रभु नाहीं अइले॥३॥
तुलसीदास प्रभु ओस चरन के,
चरन लपटाइ गइलों प्रभु नाहीं अइले॥४॥
उमीरिया हो०।

सूरदास की भोजपुरी रचना।

सूरदास की भोजपुरी रचना के सम्बन्ध में शंका की जा सकती है कि जब उन्हों ने मथुरा से बाहर भ्रमण नहीं किया तब कैसे भोजपुरी सीखी और उसमें रचना की। किन्तु इसके उत्तर में कहना है कि मथुरा में भोजपुरी यात्रियों और साधुओं का अभाव नहीं था। उनके संसर्ग से भोजपुरी सीख कर सूरदास जी ने भोजपुरी में उपदेश दिया होगा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varan

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उनकी शब्दावली को देखने से तथा भाव व्यञ्जन या वर्णन शली और रस परिपुष्टि से कितेक गीतों के दूसरों द्वारा लिखे जाने या अनूदित होने की शंका की ही नहीं जा सकती।

उधो हो हरिजी प्रान सनेही।
प्रान सनेही प्रान काढ़ि लिहलीं॥ उधो हो०।
आप जाइ दुआरिका में बइठले,
मोर सुधि बिसरवलीं। उधो हो०
आप जाई दुआरिका बिरजलीं,
कबहीं के साथी ना भइलीं॥ उधो हो०।
जौं देखलीं ओही कोंप-मण्डप में,
तबहीं से साथी भइलीं। उधो हो०।
सूर हो दास प्रभु आस चरन के,
हरिजी के दासी भइलीं॥ उधो हो०।

सूर का दूसरा गीत सुनिये:—

कान्हा बिराजे आजु कहाँ बतला द ए उधो।
जो हम होइतीं जल के मछरिया,
कान्हा करितें असनान चरण धोई पिइतीं ए उधो॥
जो हम होइतीं सीप के मोतिया,
कान्हा पहिनतें हार गले बीच सोहतीं ए उधो।

CC-0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जो हम होइतीं मोर के पँखिया,
कान्हा करितें शृंगार मुकुट पर सोहतीं ए उधो ॥
जो हम होइतीं बाँस के बंसुरिया,
कान्हा बजइतें तान मधुर सुर भरितीं ए उधो ।
सूर दास प्रभु आस चरन के,
हरि के चरन पर ध्यान परम चित लइतीं ए उधो ॥

हिन्दी के इन महाकवियों के अतिरिक्त दरियादास, पलटू दास, गोविन्द साहब, मीरा बाई, रैदास, जगजीवन दास आदि सन्त कवियों की रचनायें भी भोजपुरी में प्रचुर मात्रा में मिलती हैं। सारन और मोतीहारी जिलों में प्रचलित सरभंग और सखी सम्प्रदाय में सन्त कवि अनेकानेक हो गये हैं जिनकी हजारों प्रौढ़ रचनायें भोजपुरी में आज भी वहां गायी जाती हैं। भिनक राम, टेकमन, भोखम, बलखंडो, हरजाल, तुला राम, केशव शंकर, लक्ष्मी सखी के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कवियों के गीत मोतीहारी के पं० गणेश चौबे ने संग्रहीत किये हैं। सन्तनामी सम्प्रदाय के जगजीवन साहब ने जिनका जन्म स्थान बाराबंकी है और जो धरणीदास के समकालीन थे भोजपुरी में प्रचुर मात्रा में लिखा है। इन कवियों के अतिरिक्त रहीम, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, घाघ, बहुरी आदि कवियों ने भी भोजपुरी में लिखा है। घाघ बहुरी की कवितायें

C0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varan

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आज खेतिहरों के घर घर की चीज है। इनसे खेती के कामों में सहायता मिलती है।

इन कवियों की रचनाओं के उदाहरणों को उद्धृत करने से सिद्ध हो जायगा कि भोजपुरी में बड़े महाकवियों का अभाव पहले नहीं था और आज भी नहीं है। परन्तु यहां स्थान और समय दोनों की कमी है। इस से सबों को उद्धृत करना कठिन है।

फिर भी इन कवियों में से कतिपय कवियों की भोजपुरी रचनाओं के उदाहरणों का एक एक चरण ही उद्धृत करके पाठकों को उनकी प्रौढ़ता तथा सरसता दिखा देना अनुचित न होगा।

जगजीवन साहबः—

जोगिया भंगिया खवावल बउरानी फिरी दिवानी।
अइसन जोगिया के बलि बलि जइहौं जिन मोहि दरस दिखावल।

पलटूदासः—

प्रेम बान जोगी मरलसि हो, कसकइ हियरा मोर।
काहे के लगवल सनेहिया हो, अब तुरल न जाय।

CC-0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अरे अरे सुरति सुहागिन, पइयां तोरी लागिला हो।
ललना उठऽ कन्त मनाव हु, इहे वर मांगीला हो।

मीराबाईः—

हमरो दिल राम के मन बसले।
कांचहि ईंट बाबा महल उठवलें,
भभरी हो लागल केवाड़ी।
बाबा कहेलें जहर देइ मरबो,
अम्मा कहेली देबो फाँसी।
चाचा कहेलें जहर देइ मरबों,
चाची कहेली देबो फाँसी।
देसहिं देस बाबा जहर खोजवलें,
पिसि पिसि दीहिलें भेजि।
एक खोरा पिअलों दूसर खोरा पिअलों,
जहर से लागल प्रीति।
सोने के थार कपूर बाती,
हरिजी के आरति उतारीं।
हमरो दिल०॥

0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मगन भइली मीरा हरि गुन गान ॥
मीरा कारन बाबा जहर पठवले,
खोलि देखसु मीरा हो गइले पान ॥
मीरा कारन बाबा नाग पठवले,
मीरा देखसु ऊ त सालिगराम । मगन भइली० ॥

श्री मिनक रामः—

आगि लागे बनवा, जरे परबतवा,
मोरा लेखे हो साजन जरे नइहरवा ।

लक्ष्मी सखी—जो छपरा जिला सीवान सबडिवीजन के थेः—

मने मने करीले गुनावन हो, पिया परम कठोर ।
पाहनो पसीजि पसीजि के हो, बहि चलत हिलोर ॥

भोजपुरी महाकाव्य ।

भोजपुरी के इन बड़े कवियों की साहित्यिक निधियों के अलावे जो हिन्दी के भाण्डार में तथा जनता के कण्ठ में आज बन्द हैं और जिनको वहाँ से निकाल लाने के लिये भोजपुरी के प्रेमी को अथक परिश्रम करना है भोजपुरी के अपने महाकाव्य भी प्रकाशित हैं । भोजपुरी के वीर काव्य लोरकी के कई संस्करण प्रकाशित हो चुका है । ग्रीयर्सन साहब ने भी इसके कुछ अंश छापे हैं । भोजपुरी का आल्हा भी छप चुका

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

है। नायकवा, सोरठी कुँअर विजयमल, मरथरी आदि लोक काव्य के छपे संस्करण मुझ को देखने को मिले हैं। ये काव्य भोजपुरी के वीर, शृंगार, शान्त रस के प्राचीन गाथा काव्य हैं। ग्रीअर्सन साहब इनको Bhojpuri Epics की उपाधी देते हैं और उन्होंने इन सबों का प्रकाशन भी कमो बेशी मात्रा में पत्र पत्रिकाओं में समय समय से कराया है। आज तो इन पुस्तकों को कई प्रकाशकों ने छापा है और उनकी बिक्री भी काफी है। इन काव्यों का अनुवाद मगही और मैथिली भाषा में भी मुझ को सुनने को मिला है।

इन महाकाव्यों के रचयिता का पता यद्यपि नहीं है परन्तु इनके इतने दिनों से जन कंठो में स्मरण रहते चले आना ही इनकी प्रौढ़ता और सुन्दरता तथा महाकाव्य होने का प्रमाण है।

भोजपुरी की अन्य प्रकाशित रचनायें।

भोजपुरी की इन उपर्युक्त साहित्यिक निधियों के अतिरिक्त भोजपुरी की अन्य प्रकाशित प्राचीन और अर्वाचीन पुस्तकें भी हैं जिनका संक्षिप्त विवरण यों है।

१ डा० सर ग्रीअर्सन द्वारा संग्रहीत और प्रकाशित भोजपुरी गीत और कविता तथा भोजपुरी व्याकरण।

0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

२ डा० हार्नली तथा कैम्पबेल द्वारा भोजपुरी पर प्रकाशित निबन्धों में भोजपुरी के गीत और काव्य।

३ लाल खड्ग बहादुर मल्ल, राजा मझौली द्वारा प्रकाशित ६० कजरियों का संग्रह।

४ रविदत्त शुक्ल कृत देवाक्षर, चरित नाटक के अनेक दृश्य भोजपुरी में है।

५ जंगल में मंगल, नामक पुस्तक में भोजपुरी में बलिया में होने वाली घटनाओं का वर्णन है। (१८८६)

६ रोम गरीब चौबे के 'नागरी विलाप' (काशी १८८६ ई०) में भोजपुरी कवितायें।

७ भारत जीवन प्रेस काशी के स्वामी बा० रामकृष्ण वर्मा ने बिरहा नायिका भेद लिखा था।

८ दूधनाथ उपाध्याय लिखित गो विलाप छन्दावली।

९ भिखारी ठाकुर कृत बीसियों नाटक, प्रहसन तथा कविता।

१० पं० राहुल सांकृत्यायन कृत नाटक जो किताब महल इलाहाबाद से प्रकाशित हुए हैं।

११ रघुबीर शरणजी लिखित बटोहिया आदि अनेक काव्य पुस्तकें।

१२ पं० कृष्णदेव उपाध्याय कृत भोजपुरी ग्राम गीत (हि० सा० स० प्रयाग)।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

१३ पं० श्याम बिहारी तिवारी कृत हास्य रस की "दिहाती दुलकी" नामक प्रौढ़ काव्य पुस्तक।

१४ बा० दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह लिखित ६०० पृष्ठों की भोजपुरी लोक गीत में करुण रस नामक प्रौढ़ पुस्तक अपनी भूमिका के साथ हि० सा० स० प्रयाग द्वारा प्रकाशित हो चुकी है और शांत और करुण रस का संग्रह भी तैयार हो रहा है।

१५ डा० उदय नारायण तिवारी ने भोजपुरी पर डाक्टरेट की थिसिस लीखी है और भोजपुरी का बृहद व्याकरण तैयार किया है।

१६ महेन्द्र मिश्र छपरा के गीतों का संग्रह।

यह विवरण प्राचीन कवियों की रचनाओं के सम्बन्ध में है जिसे मैंने अपने संक्षिप्त और लघु ज्ञान के आधार पर ही पेश किया है। यदि आज भोजपुरी भाषी १४ जिलों के कवियों की नामावली छान बीन करके तैयार की जाय तो वह बृहद नामावली होगी।

भोजपुरी के कतिपय वर्त्तमान कवि।

हर जिले में अनेकों कवि आज भी ऐसे जीवित हैं जो अपनी रचनाओं से अपने जिले की जनता का मनोविनोद किया करते हैं। इन कवियों की भी एक सूची अपनी जानकारी के अनुसार यहां न देना उनके प्रति अन्याय करना होगा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शाहाबाद:—

प्रिन्सिपल मनोरंजन प्रसाद एम० ए०—आप ने भोजपुरी में बहुत प्रचुर रचनायें की हैं। पर वे प्रयत्न करने पर भी पुस्तक के रुप में प्रकाशित नहीं हुई हैं। आपका फिरङ्गिया गीत सन् १९२१ के आन्दोलन में बहुत प्रासद्ध था। यह सरकार द्वारा जब्त था। जिसकी ये पंक्तियां:—

"भारत के छतिया पर भारत बलकवा के,
बहेला रकतवा के धार रे फिरङ्गिया"।

बहुत प्रसिद्ध है।

हरिहर सिंह:— आप का राष्ट्रीय गीत उत्तर भारत में यू० पी० और बिहार प्रान्त में बहुत ही ख्याति प्राप्त कर चुका हैं। आप ने भोजपुरी में प्रचूर मात्रा में रचनायें की हैं पर आपकी लापरवाही से उनको प्राप्त करना आपके जीवित काल में ही दुर्लभ हो रहा है। आपका कँअर सिंह पर वीर काव्य जो सब से नूतन रचना हैं बहुत ही प्रौढ़ है।

प्रो० परमंस राय, आरा जैन कालेज:— आपने भी प्रौढ़ भोजपुरी रचनायें की हैं।

कवि शिवमंगल:— अभी आप का देहावसान हो गया है। आपने भोजपुरी रचनाओं के बलपर सन् १९४२

0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varan

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के आन्दोलन में अच्छी ख्याति प्राप्त की है। आपका:- 'अब ना बचिहें कलकत्ता त्रिधाता सैंयां' शीर्षक गीत बहुत विख्यात है।

बाबू रंगबहादुर प्रसाद:- आप के भोजपुरी गीत बहुत सुन्दर होते हैं।

पं० रामदयाल पाण्डे, सम्पादक बालक:— आपने भी भोजपुरी में इधर रचनायें की हैं।

दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह—आप समय समय पर कुछ लिख दिया करते हैं।

छपरा:—

बाबू रघुबीर शरण:— आप के बटोहिया आदि अनेक प्रकाशित रचनाओं का विवरण ऊपर दे चुका हूं। आपने अर्वाचीन-कवियों में सर्व प्रथम भोजपुरी रचनायें प्रकाशित करायी जिनकी प्रसिद्धि और लोक प्रियता खूब बढ़ी।

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोर प्रान बसे हिम खोह रे विदेसिया।

भिखारी ठाकुर:—आप का भी जिक्र ऊपर किया जा चुका है। आप भारतीय शेक्सपियर कहे जाने लगे हैं। आप की आज बड़ी ख्याति है। आपका विदेसिया नाटक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बहुत प्रसिद्ध है। आप पर आज कल पत्रों में काफी चर्चा होने लगी है। आपकी रचनाओं का बीसों संस्करण हिन्दी में छप चुका है।

महेन्द्र शास्त्री:— आप के ग्रामीण सोहर बहुत ही सरस होते हैं।

महेन्द्र मिश्र:— आपके भजन, पुरबी आदि गीत बहुत ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। कई पुस्तकें प्रकाशित हैं।

मोतीहारी:—

पं० श्याम बिहारी तिवारी, 'दिहाती':— आप का भी जिक्र ऊपर आ चुका है। आप हास्य रस में बहुत प्रौढ़ और सुन्दर रचनायें करते हैं। आप के रचनाओं का प्रकाशन होने लगा है। आपके अभी "दिहाती दुलका" का द्वितीय संस्करण हो चुका है।

रामदेवजी, 'वीर' B. A. :— राज हाई स्कूल चम्पारन यहां के अन्य कवियों की जानकारी मुझे नहीं है।

आजमगढ़:—

ठाकुर विश्राम सिंह:— आप के विरह की कवितायें प्रौढ़ और साहित्यिक होती हैं। विरह की ऐसी सुन्दर रचनायें बहुत कम मिली हैं। आपकी कविताओं को सुन कर

CC. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varan

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पं० बलदेव उपाध्यायजी ने सीवान में कहा था, 'विरह की ऐसी कवितायें मुझे संस्कृत में नहीं मिली है'। आप की कुल २० कवितायें मुझे प्राप्त हैं। पर शायद वे ही आप को अमर बनाने के लिये काफी है। आप का प्रकृति वर्णन के साथ साथ अपना विरह प्रदर्शन विरहा-छन्द में बहुत सुन्दर और हृदय को स्ववश करने वाला होता है। आप ने अपनी पत्नी के मरने पर ये रचनायें की थी। शोक है अभी आपका देहावसान हो गया।

मिया रज्जाक :— आप नीति के विरहा लिखते हैं जो सरस और प्रौढ़ होते हैं।

श्री हरीशदत्त उपाध्याय B. A. :— आप आजमगढ़ के निवासी हैं। आप ने भोजपुरी में अभी 'रघुवंश काव्य' का स्वतत्र पद्यानुवाद किया है, जो अभी प्रकाशित नहीं हो पाया है। यह बहुत सुन्दर और स्वतन्त्र चीज है।

गोरखपुर :—

मादकजी :— पूरा नाम मुझे ज्ञात नहीं। आपने भोजपुरी में अच्छी रचनायें की है।

गोरखपुर के अन्य कवि तथा बलिया, बनारस, गाजीपुर, पलामू, राँची आदि जिलों या भोजपुरी प्रान्त के अन्य जिलों के कवियों की जानकारी मुझे न होने के कारण उनकी

C0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नामावली यहां पेश नहीं कर सका हूं। इससे यह न समझना चाहिये कि वहां ऐसे कवियों का अभाव है।

मनन द्विवेदी ने भी कुछ सवैया भोजपुरी में लिखी है।

इन कवियों की रचनाओं का रसा-स्वादन करा देना तो बहुत ही जरूरी था पर समय का अभाव है फिर भी विश्राम जी तथा भिखारी ठाकुर की एक एक रचनाओं को सुना कर ही मैं क्षमा चाहूंगा।

विश्राम जी का विरहा

डूबि गइले सुरुज बढ़इता मोरे भइया,
भइली पछिमा दिसा हो अब लाल।
लाल भइलो दिसवा चाँन धीरे २ अइले,
उड़ि उड़ि के पंछी अपना देसवा के गइले॥
धीरे धीरे तरइन के पाँती बहिरइली,
करिया ओढ़निया लेके राति चलि अइली।
मिटि गइली दिन के अब बचली निसानी,
जइसे मिटि जाले जग में दुखी के कहानी॥
मिटि गइली सांझि केरी चढ़ली जवनिया,
जइसे मिटे गरमी में तलवा के पनियाँ।
कहे बिसराम जग में मिटेला निसान,
जइसे मिटे दिनवा औ रात॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एहि तरे मिटिहें सारे जग के मनइया,
जइसे मिट जाला पुरइन के हो पात।

अपनी पत्नी के मरने पर घर बाजों की तानाकशी से उब कर कवि उस चित्र को चित्रित करता है।

मो के विपतिया सतावे मोरे दइय,
गऊंआ कहे मेहर वस हउवे सार।
बुढ़वा त कहे हमरो मरल बा मेहरिया,
कबहूं ना तोरली आपन अइसे सरीरिया॥
कहेले जवनका मेहरी मरे बहुत जग में,
उनके मरदवा ना रोवे अइसे मग में।
इनहो के सीता जनू मरलि बाटीं मइया,
इ त रोवे नित जरिया बेजरिया॥
एक ठे मेहरिया मरत इ बेहाजवा भइल,
अपनो हिमतिया अइसे हार।
पिताजी त कहें बेटा करबों बिअहवा,
काहे होल ओ में लचलीन॥
एतनी तू बतिया नाहीं जनते अ मोरे बाबू,
उनका सुरतिया मनवा में हवे आसीन।
मामी कहे बाबू हो गुजोव के तू फुलवा,
उ त रहे ढकवा के हो पात॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तनी मंह खोल तोहार भइया लेइ अइहें,
बाबू अति बेस अच्छी हो सवगाव।
ढकवा के पतवा हमरा मनवा लोभइले,
का हम करव इ लेइ के बेइल के फुज॥
पतवा के छहवाँ जो होते मोरी माभी,
नाहीं उठते जियरा में ऐसन सूल।

अब एक वीर नवागत उस क्षत्राणी की उक्ति सुनिये जिसके घर में प्रवेश करते ही जौहर की तैयारी होती है। विवाह के समय आजमगढ़ जिले में ऐसे कितेक गीत गाये जाते हैं।

आजु हव जौहर के रात चना धीरे उगिह।
गढ़िया पर उगिह, गुम्मज पर उगिह,
पहिरे केसरिया बाना, बलमु के तेगो पर उगिह॥

भिखारी ठाकुर की रचना का एक छोटा ही उदाहरण यहाँ देता हूँ :—

बिदेसिया नाटक की नायिका बटोही से अपने बालम की हूलिया बता रही है कि उसको पहचान कर वह उससे उसका सन्देश कहेगा।

हमरा बलमु जी के बड़ी बड़ी अखिया से,
चोखे चोखे बाड़े नयना कोर रे बटोहिया।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varan

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ओठवा त बाड़े जइसे कतरल पनवा से,
नकिआ सुगनवा के ठोर रे बटोहिया।
दँतवा ऊ सोभे जइसे चमके बिजुलिया से,
मोछियन भँवरा गुंजारे रे बटोहिया।
मथवा में सोभे रामा टेढ़ी कारी टोपिया से,
रोरी बुना सोभे ला लिलार रे बटोहिया।

अब अन्त में मुझे अपनी भोजपुरी रचना का भी एक नमूना सुना कर आपको यह दिखाना है कि भोजपुरी में भी हिन्दी की नयी शैली की कविताओं के आधार पर उच्च कोटि की कवितायें नये २ भावों और उपमाओं के साथ लिखी जाती हैं :—

'फरार की डायरी' का नायक सोभुआ फाँसी की दण्डाज्ञा सुनकर जेल के सीकचों के भीतर से यह गीत अपनी थर्राती हुई आवाज में भरे दिल के अरमानों के साथ गाता है :—

समय अइसे बीतल चल जा रहल बा।
घड़ी दिन महीनन से आगे निकसि के,
इ बरिसन में अपना के गिनवा रहल बा।
ओसहीं ई सरिसों के फूलन से होइ के,
आ गंगा आ जमुना के कूलन से बहि के,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जे एकरा के प्रतिपल जलवलनि मिटवलनि,
ओही नाश के मूल भूलन के गहि के—
ललकारत गइल रहे हमरा के ओह दिन,
उहे बात फेनि आजु दोहरा रहल बा ॥१॥

नया उलझनन के नया जाल बोनत,
नया स्वर, नया ताल के राग गावत,
हम विस्मृति में अपना पड़ल डूबल डूबल,
ओह छोटकिन भूलन के इतिहास गूनत—
विदा करि नेलीं एक के सान्ति से, तब,
जेकरा बुलवलीं से अब जा रहल बा ॥२॥

बहुतन गुनाहन के तोबा रहलीं कइले,
बहुतन सुधारन के आशा रहलीं बँधले;
यही जायेवाला के आवत समुझि के,
बहुतन बिचारन के आसरय रहलीं दिहले,
पड़ल रह गइल मन के ऊ बोजना सब,
इ आ के स्वयं ही चलल जा रहल बा ॥३॥

हमे वेदना के पिआला पिअवलसि,
हमें यातना के दुनिया दिखवलसि,
कृतघ्नो हईं ना—हम ई मानीला भाई !
रोआ के तू हमरा के अकसर हँसवल ।

0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varan

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुभासीस द जाती बेरिया मुसाफिर,
ऊ होखे सुखद जे अब आ रहल बा ॥४॥

अस्तु भोजपुरी साहित्य के सम्बन्ध में इतना कहकर अब मैं

भोजपुरियों की अपनी अलग जातीयता और भोजपुरी प्रान्त की आवश्यकता

के सम्बन्ध में कहूँगा। भोजपुरी भाषा भाषियों को अपनी अलग जातीयता है। उसका अपना विशेष रहन सहन है। अपना अलग स्वभाव और जीवन के अलग दृष्टि कोण हैं। उसका रहन सहन सादा, विचार साधारण पर ऊँचा, प्रकृति अक्खड़ और बलाढ्य है। धर्म्म में उसका अन्ध विश्वास है जरूर पर इसी के साथ उस धर्म्म को अपने जीवन के साहस पूर्ण कामों और नई नई कठिनाइयों के अनुभवों में बाधक वह नहीं होने देता। वह दिखावटी या लिफाफाबाज कम और वास्तविक अधिक होता है। अपनी कुशाग्र बुद्धि से वह परिस्थिति को गम्भीरता को तुरत समझ लेता है और उसके अनुसार अपने को बना लेने के लिये तुरत कार्य्य शील हो जाता है। उसके नस नस में अक्खड़पन, निर्भयता और वीरता भरी रहती है। वह लड़ाई केवल लड़ाई भर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

को मोल लेने को तैयार रहता है। परन्तु इसी के साथ साथ अपनी जातीयता, भाषा और धर्म्म उसको कभी नहीं भूलते। वह अपने पौरुष और पराक्रम पर विश्वास करता है। इसी से वह दूर दूर देशों में भी जाकर बसते हिचकता नहीं। आज भी वह भोजपुरी में बात करना सबसे अधिक पसन्द करता है। इसीसे भोजपुरी प्रदेश के निवासियों का विवाह सम्बन्ध अब आपस में अधिक होते हैं। क्या यू० पी० के भोजपुर जिले और क्या बिहार के भोजपुरी भाषी जिले सब आपस में एक हैं। सबका संस्कार 'विचार' दृष्टिकोण एक होता है। परन्तु इस तरह से एक संस्कार वाली जाति को दो प्रान्तों में बाँट कर अंग्रेज जाति ने उसकी उन्नति को रोक दिया है। इससे आवश्यकता अब इस बात की है कि सभी भोजपुरी भाषी जिले यू० पी० और बिहार से निकाल कर आपस में मिला दिये जांय और उनका संस्कार और भाषा के अधार पर एक अलग भोजपुरी प्रान्त बनाया जाय। इससे बिहार के पश्चिमीय और यू० पी० के पूर्व्वीय १४ जिलों का एक प्रान्त बहुत सुन्दर बनेगा और यू० पी० प्रान्त की विशालता भी इससे कम हो जायगी।

यू० पी० के पाश्चात्य जिले जो पूर्व्वीय जिलों पर अपना अधिपत्य जमाना चाहते हैं जिससे पूर्व्वीय जिले

C0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वाले ऊब से गये हैं और अपना अलग प्रान्त भाषा के आधार पर बनाना चाहते हैं। फिर बिहार में भी जो पूर्व्वी बिहार पर इन भोजपुरियों के पराक्रम और बुद्धि की धाक बैठी हुई है उसका भी इन जिलों के बिहार से हटकर भोजपुर प्रान्त में शामिल हो जाने से खातमा हो जायगा। फिर भोजपुरियों में अपने अलग प्रान्त बनाने का भावना भी तो दिन दूना रात चौगुना जाग्रत हो रहीं है जो इस उन्नति के समय में दबाई भी नहीं जा सकती इसका प्रमाण यह है कि इसी सिवान में होने वाले भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन में भोजपुर प्रान्त अलग बनाने का प्रस्ताव पास किया गया और तब से आज तक छः मास की अवधि में तीन भोजपुरी-साहित्य सम्मेलन भोजपुर प्रान्त में हो गये और सबों ने भोजपुर प्रान्त के निर्माण के लिये प्रस्ताव पास किया। अतः आवश्यकता है भोजपुर प्रान्त का निर्माण शीघ्रातिशीघ्र समय में किया जाय। और इसके लिये भोजपुरी जनता आन्दोलन करे।

सुझाव

भोजपुरी भाषा के उत्थान के लिये आवश्यक है कि भोजपुरी ग्रामगीत, मुहावरे, कहानियाँ, लोकोक्तियाँ, शब्द, कहवत आदि के संग्रह का कार्य्य भोजपुर प्रान्त के हर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जिले में सुसंगठित रूप से चालू किया जाय और उनके संचालन के लिये प्रकाशन-संस्थायें खोली जायं। इससे भोजपुरी की उन्नति के साथ साथ हिन्दी की भी उन्नति होगी।

अन्त में मैं आप लोगों को धन्यवाद देकर अपना भाषण समाप्त करता हूँ।

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः

CC-0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varan

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS.

C0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varana

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Vara

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi